SAMQUEST-Journal of Emerging Innovations
E-ISSN 3108-1207
Vol.1,Issue 2,pp.230-236 , July- Dec 25
Available online at : https://www.samglobaluniversity.ac.in/archives/

Review

हिंदी साहित्य में मानवीय जीवन मूल्य

शोधार्थी अनिल कुमार सोनी

Corresponding E-mail: researchcoordinator@samglobaluniversity.ac.in

Received: 10/August /2025; **Accepted**:15/August /2025 ;**Published**:7/Feb/2026.

शोध आलेख

विषय : हिंदी साहित्य में मानवीय जीवन मूल्य

शोध सार :

मानव समाज में रहते हुए अर्जित अनुभवों के द्वारा जो ज्ञान प्राप्त करता है वही उसकी प्रकृति को निर्धारित करता है । मूल्य जन्मजात होते है परिवार के संस्कार उसे जीवन जीने का उद्देश्य प्रदान करते है, वहीँ दूसरी ओर समाज में व्याप्त विसंगतियां उसके जीवन को अन्दर तक प्रभावित करती है सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण मानव जीवन में आदर्श मूल्यों की स्थापना करता है। चूँकि साहित्य और समाज अन्योन्याश्रित है अतः देश काल और वातावरण का प्रत्यक्ष प्रभाव साहित्य में प्रतिबिंबित होता है इस प्रकार साहित्य चाहे किसी भी भाषा में रचा गया हो , किसी भी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करे, किसी भी मत, सिद्धांत या विचार का संवाहक हो उसमे कोई न कोइ नैतिक व सार्वभौम विचार समाहित होता ही है जो जीवन को संतुलित और उद्देश्यपूर्ण बनता है | भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही जीवन मूल्यों को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। भारतीय विद्वानों ने तो जीवन मूल्यों को सीधे सीधे धर्म से जोड़ा है । जो गुण धर्मानुकुल पाए गए है, उन्हें ही जीवन में स्वीकार किया गया है । साहित्य में निहित जीवन-मूल्यों से मनुष्य को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। हिंदी साहित्य में प्रेम,करुणा, दया, सत्य, अहिंसा, न्याय, समता, स्वतंत्रता,

सहनशीलता, और आत्मसम्मान जैसे मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस प्रकार समकालीन साहित्य में इन मूल्यों कि स्थापना एवं एक बेहतर दुनिया कि कल्पना साहित्यकारों का लक्ष्य रही है|

बीज शब्द :

प्रेम, स्नेह, करुणा, दया, सत्य, अहिंसा, न्याय, विश्व बंधुत्व, समानता, स्वतंत्रता, सहनशीलता, आत्मसम्मान, असमानता, विद्रोह, असंतोष, पीड़ा, नारी, संवेदनशीलता , संवेदनहीनता ।

प्रस्तावना :

साहित्य का प्रतिपाद्य विषय जीवन मूल्य हैं | मूल्य शब्द का अर्थ है- जीवन मूल्य अर्थात् जीवन के मानदण्ड। मूल्य मानव समाज की सभ्यता एवं संस्कृति के परिचालक तत्व हैं।मानवीय जीवन मूल्य वे आदर्श और नैतिक प्रतिमान होते हैं, जो इन्सान को इंसान बनाते है इंसान को सच्चाई, अच्छाई, और समाज में अपने उत्तरदायित्व का अहसास कराते हैं। हिंदी साहित्य में रचनाकारों ने हमेशा से ही इन मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया है ।

जीवन मूल्य किसी भी समाज की लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनिवार्य प्रतिमान होते हैं। हमारे मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्द्धन में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मनुष्य की बौद्धिक क्षमता एवं मौलिक चिंतन शक्ति के परिणाम स्वरुप समाज स्वीकृत नैतिक मूल्य विकसित हुए हैं जो सर्व मान्य है। समाज में मानवीय व्यवहार के मानक मूल्यों को ही स्वीकार किया जाता है आदर्श मानव दुनिया में धर्म, जाति, लिंग, मत मतान्तर, देश काल वातावरण का विचार किए बिना समस्त मानव जाति के कल्याण एवं विश्व शांति की कामना करता है |

आज अगर हम वर्तमान परिद्रश्य पर विचार करें तो स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि वर्तमान आर्थिक युग में वस्तु की उपयोगिता का आकलन किया जाता है। जबकि मूल्य की स्थिति किसी वस्तु में ना होकर सिद्धांतों में निहित होती है यह एक अमूर्त अवधारणा है जिसका संबंध मानवता से है। जीवन मूल्यों को व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहार की कसौटी पर कसा जाता है। यह दृश्यमान नहीं होते बल्कि इनका संबंध व्यक्ति की जीवन शैली से है ये मूल्य व्यक्ति को सकारात्मक बनाते है तथा जो व्यक्ति मूल्यहीन जीवन जीते हैं उन्हें समाज में व्यर्थ माना जाता हैं। इनकी सृष्टि अभाव में अधिक होती है। प्रबुद्ध व्यक्ति के कारण ही जीवन

मूल्य का विकास होता है। मानव सृष्टि के यह सिद्धांत और मर्यादा ही जीवन-मूल्य कहलाते हैं।

विश्लेषण :

हिंदी साहित्य में प्रेम, करुणा, दया, सत्य, अहिंसा, नैतिकता, आत्मनिर्भरता, संघर्ष, सहनशीलता और आत्मसम्मान जैसे मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। चूँकि साहित्य समाज का आइना होता है तो स्वाभाविक रूप से सामाजिक परिवेश, तत्कालीन परिस्थितियां, राजनैतिक एवं सामाजिक संगठन, संस्कृति एवं वैचारिकता आदि कवियों एवं लेखकों की लेखनी में प्रकट होकर मुखर होती है | प्रत्येक साहित्यकार का एक जीवन दर्शन रहता है और वह अपने दर्शन के अनुकूल ही साहित्य में जीवनमूल्यों का चित्रण करता है ।

वैसे मूल्यों को साहित्यकारों ने अपने अपने ढंग से परिभाषित किया है |

दिनकर जी के शब्दों में "मूल्य वे मान्यताएँ हैं, जिन्हें मार्ग दर्शक ज्योति मानकर सभ्यता चलती है और जिनकी उपेक्षा करने वालों को परंपरा अनैतिक, अच्छ्ंखल या बागी कहती हैं, किंतु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पुराने मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाले व्यक्ति भगवान बन जाते हैं। अतएवं साहित्य में मूल्यों का विवेचन असल में नैतिक और परंपरागत विवेचन बन जाता है।"

इसी प्रकार धर्मवीर भारती कहते है " समस्त मध्यकाल में इस निखिल सृष्टि और इतिहास क्रम का नियंता किसी मानवोपरी लौकिक सत्ता को माना जाता था। समस्त मूल्यों का स्त्रोत वही था, और मनुष्य की एकमात्र सार्थकता यह थी कि वह अधिक से अधिक उस सत्ता से तादात्म्य करने की चेष्टा करे।"

हिंदी साहित्य केवल सौंदर्यबोध या भावनात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि इसने हमेशा से मानवीय जीवन मूल्यों का मार्ग प्रशस्त किया है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, प्रसन्नता, करुणा, त्याग, समता और सह-अस्तित्व जैसे मूल्य हिंदी साहित्य में रचे-बसे हैं। समय-समय पर साहित्यकारों ने समाज की पीड़ा, संघर्ष और आशाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से स्वर प्रदान कर मानवता का दिग्दर्शन किया है।

मूल्यों की जीवन में आवश्यकता :

आधुनिक भौतिकवादी युग में मनुष्य केवल उपभोक्ता बन कर रह गया है । उसका महत्त्व आर्थिक उपादान से आँका जाने लगा है, आर्थिक शक्तियां नैतिक मूल्यों पर हावी होने का प्रयास कर रही है, वैश्वीकरण और बाजारवाद ने हमारे

सिद्धांतों और जीवन-मूल्यों को बदल कर रख दिया है, आज हर काम नफे और नुकसान से परखा जाने लगा है , यहाँ तक कि मित्रता भी स्वार्थ सिद्धि से प्रेरित है | हम भले ही भौतिक रूप से समृद्ध हो गए है परन्तु नैतिकता के पैमाने पर हम बहुत गरीब है , स्वार्थ की अंधी दौड़ में हमे न कोई सिद्धांत दिखाई देते है न कोइ जीवन मूल्य | आज परिवार रुपी संस्था को पाश्चात्य संस्कृति ने अन्दर तक प्रभावित किया है। रिश्तों में अंर्तद्ध और संबंधों में स्वार्थ के परिणाम स्वरुप परिवार बिखर रहे है, जिसका दुष्प्रभाव बच्चों पर दिखाई देता है वे स्वयं को असुरक्षित और एकाकी महसूस करने लगे है और मनुष्य आत्मकेंद्रित होने लगा है | इन विषम परिस्थितियों में साहित्य ही मनुष्य का मार्गदर्शन करता है, सही और गलत में विभेद करना सिखाता है, न्यायप्रिय, संवेदनशील, और सहिष्णुता का परिचायक है | पौराणिक ग्रन्थ जैसे रामचरित मानस मानव जीवन में मर्यादा, त्याग, स्नेह, भ्रातत्वभाव सिहत है वहीँ भगवत गीता मनुष्य को ज्ञान योग और कर्म योग के माध्यम से ध्येयनिष्ठ कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर करते है | कालांतर में साहित्यकारों ने अपने रचनाधर्म के माध्यम से एक आदर्श मनुष्य कि प्रतिस्थापना का कार्य किया है |

जीवन मूल्यों का वर्गीकरण :

इस प्रकार हम प्रमुख जीवन मूल्यों को निम्नानुसार वर्गीकृत कर सकते है |

1. प्रेम और करुणा :

हिंदी साहित्य में सौन्दर्यबोध, प्रेम और करुणा कवियों का पसंदीदा विषया रहा है , कवियों ने रीतिकाल से लेकर आज तक प्रेम गीतों के माध्यम से नायक और नायिका के निश्छल प्रेम को स्वर प्रदान किया है क्योंकि प्रेम न केवल व्यक्ति के आंतरिक चित्त को शुद्ध करता है,बल्कि इन्सान को इन्सान से जोड़ता है, समाज में स्नेह का भाव जाग्रत कर सद्भाव और सहयोग का संदेश देता है। भावनात्मक लगाव ,प्रेम और करुणा की अवधारणा प्राचीन काव्य रचनाओं से लेकर आधुनिक उपन्यासों तक प्रमुख रही है। जैसे कि प्रेमचंद की रचनाओं में उनके पात्रों का संघर्ष और उनकी संवेदनशीलता, मानवीय अनुभूतियाँ इस बात का प्रतीक है कि वास्तविक प्रेम और करुणा मानवता की असली पहचान हैं। महादेवी वर्मा की कविताएँ करुणा और नारी संवेदना की सशक्त अभिव्यक्ति हैं |

2. सत्य और नैतिकता:

भारतीय संस्कृति में सत्य को सर्वोच्च प्रतिमान के रूप में स्थापित किया गया है , हिंदी साहित्य में सत्यम, शिवम्, सुन्दरम कि त्रिवेणी प्रवाहित हुयी है। हिंदी साहित्य के महान रचनाकारों जैसे तुलसीदास, सूरदास, और कबीर ने मध्यकाल में अपने साहित्य में सत्य और नैतिकता के प्रतिमान स्थापित किये है| तुलसीकृत रामचरितमानस में राम के जीवन को मर्यादापूर्ण और आदर्श माना गया है, जहाँ बुरे पर अच्छाई की जीत को प्रमुखता दी गई है। यही सत्य समाज को दिशा दिखता है। कालांतर में भी हिंदी साहित्यकारों ने अपने रचनाकर्म के माध्यम से सत्य और नैतिकता कि पुनस्थापना की है |

3. शोषण और संघर्ष:

हिंदी साहित्य में पीड़ा, शोषण, संघर्ष और आत्मनिर्भरता के मूल्यों को भी विशेष स्थान मिला है। प्रेमचंद जैसे कालजयी रचनाकारों कि की कहानियाँ जैसे- कफ़न, और पूस की रात में गरीब वर्ग की पीड़ा,शोषण और संघर्ष की पराकाष्ठा को दर्शाया गया है, जो समाज के उत्पीड़न और भेदभाव के बावजूद अपनी पहचान बनाए रखता है। यही संघर्ष जीवन की सच्चाई को उजागर करता है और समाज में समानता की दिशा में प्रेरित करता है। कबीर ने अपने दोहों में जाति-पाँति, शोषण और ढोंग का विरोध कर समानता पर बल दिया |

4. समाज सुधार और समानता:

हिंदी साहित्य में समाज सुधार और समानता के विचारों का प्रसार भी महत्वपूर्ण है। कई साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज के वंचित और सर्वहारा वर्ग के अधिकारों की बात की है। स्वतंत्रयोत्तर काल में रविंद्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी के विचारों ने समाज में जातिवाद, छुआछूत और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ आवाज़ उठाई। जिसके परिणामस्वरूप समकालीन साहित्यकारों ने उनकी रचनाओं में समाज में समानता, भाईचारे, और मानवाधिकार की रक्षा की आवश्यकता पर बल दिया गया।

5. आत्मसम्मान और संवेदनशीलता :

हिंदी साहित्य में सदैव से आत्मा की आवाज को मुखर किया है । विशेष रूप से महिला साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं के आत्म-सम्मान और अधिकारों पर केंद्रित रचनाओं का सृजन किया। महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, और अन्य

साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि समाज में महिलाओं को समान अधिकार मिले और उन्हें उनके आत्म-सम्मान के साथ जीवन जीने का पर्याप्त अवसर मिले ।

6. स्त्री शिक्षा और सम्मान :

समकालीन लेखक और लेखिकाओं ने स्त्रियों पर हो रहे अत्याचारों को निकटता से देखा और उन पर हो रहे अत्याचारों और उनके दर्द को अनुभव किया जिसे उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त कर नारी जागरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया | सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत स्त्रियों को घर की दहलीज लांघने की इजाजत नहीं दी जाती थी नारी को सामान्य अधिकार भी प्राप्त नहीं थे। अनेक रचनाकारों ने स्त्री की इस पीड़ा, घुटन को महसूस किया और उन्हें पुरुष के वर्चस्व, पुरुष द्वारा बनाये गये इस एकाधिकार को समाप्त करने की हिम्मत दी |

प्रविधि :

हिंदी साहित्य का फलक बहुत विस्तृत है, जिसमे मानव जीवन के विविध पक्षों को बहुत ही खूबसूरती के साथ उकेरा गया है, इसमें विशेष रूप से समकालीन साहित्य में समाज के सभी वर्गों और समुदायों को शामिल किया है, जीने अब तक अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए अवसर नहीं मिल सका था, जिसने खास तौर पर स्त्रियों, वंचितों, शोषितों, दलितों, और आदिवासी जीवन के संघर्ष को केंद्र मे रखकर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा की है। इस क्रम में फणीश्वरनाथ रेणु , प्रेमचंद जैसे लेखकों ने ग्राम्य जीवन की समस्याओं एवं स्त्रियों, वंचितों, शोषितों, दलितों की पीड़ा को अपने कथा साहित्य में स्थान दिया है जिसने तत्कालीन समाज की विद्रूपताओं को भी पाठकों के समक्ष रखा है, प्रेमचंद की रचनाओं में मानवीय जीवन के विविध पहलुओं का सजीव चित्रण मिलता है। उनके उपन्यास गोदान, कफ़न, और निर्मला में गरीबी, असमानता, और समाज के कमजोर वर्गों के संघर्ष को चित्रित किया गया है। वहीँ रामचंद्र शुक्ल जैसे निबंधकारों ने चिंतामणि जैसे निबंध संग्रह में न केवल जीवन के विभिन्न विकारों का बल्कि मानवीय जीवन मूल्यों को भी चित्रित किया है | उनका मानना था कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि समाज की चेतना को जागृत करने का एक सशक्त माध्यम है। वे साहित्य में मानवता, सच्चाई, नैतिकता और सामाजिक उद्देश्य की प्रधानता पर जोर देते थे। इसी प्रकार काव्य जगत में

सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रकृति और मानव जीवन के गहरे संबंध को उजागर किया गया है। उनकी रचनाओं में सौंदर्य के साथ-साथ मानवता और समाज की समस्याओं का भी चित्रण है। उनके साहित्य में मानवीय संवेदनाओं और नैतिकता का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। वे हमेशा मानवता, प्रेम और आदर्श जीवन के पक्षधर थे। इसी प्रकार दुष्यंत कुमार की कविताओं में समाज के शोषित और दलित वर्ग की आवाज़ सुनाई देती है। उनकी कविता 'सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं' में राजनीतिक और सामाजिक अन्याय के खिलाफ गहरी चिंता और संघर्ष का स्वर है।

निष्कर्ष:

हिंदी साहित्य में मानवीय जीवन मूल्यों का सदैव सम्मान किया गया है। रचनाकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज में मानवीय मूल्यों को स्वर दिया है, जिससे समाज में सुधार और बदलाव की बयार आई । प्रेम,स्नेह, दया, करुणा, सत्य, आत्मनिर्भरता, और समानता जैसे जीवन मूल्य न केवल व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होते हैं, बल्कि समाज में एक क्रन्तिकारी और सकारात्मक बदलाव भी लाते हैं। हिंदी साहित्य ने हमेशा से इन जीवन मूल्यों को अपने लेखन के माध्यम से जीवित रखा है तथा मानवीय जीवन के अनेक पहलुओं का गहराई से विश्लेषण किया गया है, जो हमें जीवन के नैतिक और सामाजिक मूल्यों को समझने में सहायक होते हैं। साहित्य केवल शब्दों का सौंदर्य नहीं, बल्कि मानवता का दर्पण होता है जो हमें संवेदनशील, न्यायप्रिय और सहिष्णु बनने की प्रेरणा देता हैऔर मनुष्य को बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा भी देता है।

संदर्भ सूची

1. **रामचंद्र शुक्ल : चिंतामणि भाग -1 (१९३९)**
2. **धर्मवीर भारती : मानव मूल्य और साहित्य (प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ)**
3. **समकालीन हिंदी कथा साहित्य में जन चेतना, अरुणा लोखण्डे, विकास प्रकाशन, कानपुर, सं.** 1996
4. **ईश्वरवादियों जरा विचारों- लेखक रंजीत कबीरपंथी**